स्वर संधि

परिभाषा :

- ''दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को 'संधि' कहते हैं।'' संधि का शाब्दिक अर्थ है-मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

जैसे : हिम + आलय

↓ ↓

अ + आ (यहाँ 'अ', एवं 'आ' अत्यन्त निकट हैं)

आ ('अ' एवं 'आ' के मिलने से विकार हुआ)

- हिम् (म् से 'अ' निकाल ने पर)
- 'आलय' से 'आ' निकाल ने पर 'लय' बचा
- हिम् + (अ + आ) + लय

  आ
- हिम् आ लय ('म्' के साथ 'आ' का संयोग होने पर 'हिमा' बना)
- अब 'हिमा' और 'लय' दोनों को मिला देने पर 'हिमालय' बना।
- अत: हिम + आलय = हिमालय

संधि के भेद :

- संधि के तीन भेद हैं-

1. स्वर संधि 2. व्यंजन संधि और 3. विसर्ग संधि

यहाँ हम 'स्वर संधि के बारे में अभ्यास करेंगे।

स्वर संधि :

- ''स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं।''

जैसे : - अभि + इष्ट = अभीष्ट

- इ + इ = ई (यहाँ 'इ' और 'इ' दो स्वरों के बीच संधि होकर 'ई' रूप हुआ)

- स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण स्वर संधि
5. ययादी स्वर संधि

प्रथम तीन प्रकारों के बारे में समझेंगे।

(1) **दीर्घ स्वर संधि :**

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

अ + अ = आ	अन्न (अ) + अभाव (अ) = अन्नाभाव (आ)
	अन्य (अ) + अन्य (अ) = अन्यान्य (आ)
अ + आ = आ	परम (अ) + आत्मा (आ) = परमात्मा (आ)
	असुर (अ) + आलय (आ) = असुरालय (आ)

आ + अ = आ आशा (आ) + अतीत (अ) = आशातीत (आ)
जिह्वा (आ) + अग्र (अ) = जिह्वाग्र (आ)

आ + आ = आ कृपा (आ) + आचार्य (आ) = कृपाचार्य (आ)
दया (आ) + आनंद (आ) = दयानंद (आ)

इ + इ = ई कवि (इ) + इन्द्र (इ) = कवीन्द्र (ई)
अति (इ) + इव (इ) = अतीव (ई)

इ + ई = ई कपि (इ) + ईश (ई) = कपीश (ई)
कवि (इ) + ईश (ई) = कवीश (ई)

ई + इ = ई फणी (ई) + इन्द्र (इ) = फणीन्द्र (ई)
मही (ई) + इन्द्र (इ) = महीन्द्र (ई)

ई + ई = ई पृथ्वी (ई) + ईश (ई) = पृथ्वीश (ई)
जानकी (ई) + ईश (ई) = जानकीश (ई)

उ + उ = ऊ गुरु (उ) + उपदेश (उ) = गुरुपदेश (ऊ)

उ + ऊ = ऊ लघु (उ) + ऊर्मि (ऊ) = लघूर्मि (ऊ)

ऊ + उ = ऊ वधू (ऊ) + उत्सव (उ) = वधूत्सव (ऊ)

ऊ + ऊ = ऊ भू (ऊ) + ऊर्ध्व (ऊ) = भूर्ध्व (ऊ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) संधि कीजिए।

- कंस + अरि = कंसारि
- एक + आनन = ...
- गिरि + इन्द्र = ...
- पारि + ईक्षा = ...
- नाडी + ईश्वर = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- कल्पान्त = कल्प + अन्त
- भाषान्तर = ...
- विद्यालय = ...
- मुनीश = ...
- कृष्णानंद = ...
- रवीन्द्र = ...
- रजनीश = ...

(3) गुण स्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **अ / आ + इ / ई = ए**

  जैसे : - देव (अ) + इन्द्र (इ) = देवेन्द्र (ए)

  - उदाहरण में 'व' से 'ए' का संयोग होने पर देवेन्द्र और दोनों खंड़ों को मिलाने पर 'देवेन्द्र' बना।
  - **अन्य उदाहरण :**

    सुर (अ) + इन्द्र (इ) = सुरेन्द्र
    ईश्वर (अ) + इच्छा (इ) = ईश्वरेच्छा
    जित (अ) + इन्द्रिय (इ) = जितेन्द्रिय
    उप (अ) + ईक्षा (ई) = उपेक्षा
    तप (अ) + ईश्वर (ई) = तपेश्वर

लोक (अ) + ईश (ई) = लोकेश
उमा (आ) + ईश (ई) = उर्मिलेश
लंका (आ) + ईश्वर (ई) = लंकेश्वर
महा (आ) + इन्द्र (इ) = महेन्द्र
यथा (आ) + इष्ट (इ) = यथेष्ट

- **अ / आ + उ / ऊ = ओ**

जैसे : - वीर (अ) + उचित (उ) = वीरोचित (ओ)

- उदाहरण में 'र्' से 'ओ' का संयोग होने पर वीर् ओ चित सभी खंड़ों को मिलाने पर 'वीरोचित' बना।
- **अन्य उदाहरण :**

आत्म (अ) + उत्सर्ग (उ) = आत्मोत्सर्ग (ओ)
लोक (अ) + उक्ति (उ) = लोकोक्ति (ओ)
अक्ष (अ) + ऊहिणी (ऊ) = अक्षौहिणी (ओ)
गंगा (आ) + उदक (उ) = गंगोदक (ओ)
विद्या (आ) + उपार्जन (उ) = विद्योपार्जन (ओ)
गंगा (आ) + ऊर्मि (ऊ) = गंगोर्मि (ओ)

- **अ / आ + ऋ = अर्**

जैसे : - महा (आ) + ऋषि (ऋ) = महर्षि (अर्)

- 'मह्' के 'ह' से 'अ' का संयोग होने से - महषि 'र्' का रेफ हो जाने पर 'र्षि'
- 'मह' और 'र्षि' को मिलाने पर 'महर्षि' बना।
- **ध्यातव्य :** जब दो सस्वर व्यंजनों के बीच 'र्' रहे तो वह अगले व्यंजन पर रेफ बन जाता है। उपर्युक्त उदाहरण में 'ह' और 'षि' के बीच 'र्' है जो 'षि' पर रेफ बन चुका है।
- **अन्य उदाहरण :**

देव (अ) + ऋषि (ऋ) = देवर्षि (अर्)
ब्रह्म (अ) + ऋषि (ऋ) = ब्रह्मर्षि (अर्)
राजा (आ) + ऋषि (ऋ) = राजर्षि (अर्)
उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

(1) संधि कीजिए।

- भुजग + इन्द्र = भुजगेन्द्र
- नर + इन्द्र = ...
- फल + इच्छा = ...
- कमल + ईश = ...
- प्राण + ईश्वर = ...
- उमा + ईश = ...
- महा + ईश = ...
- रमा + इन्द्र = ...
- सप्त + ऋषि = ...
- अर्थ + उपार्जन = अर्थोपार्जन
- ग्राम + उद्धार = ...
- नव + उदय = ...
- पर + उपकार = ...
- नव + ऊढा = ...
- लंबा + उदर = ...
- महा + उदय = ...
- धारा + उष्ण = ...
- महा + ऋषि = ...
- सम् + कृति = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- कर्णोद्धार = कर्ण + उद्धार
- जनमोत्सव = ...
- नीलोत्पल = ...
- धीरोदात्त = ...
- चिन्तोन्मुक्त = ...
- महोपदेश = ...
- ध्वजोत्तोलन = ...
- विवेकानंद = ...
- देवेन्द्र = देव + इन्द्र
- विजयेच्छा = ...
- गणेश = ...
- भूतेश = ...
- परमेश्वर = ...
- गंगेश = ...
- थानेश्वर = ...
- विद्योत्तमा = ...
- संगीत = ...

(3) वृद्धिस्वर संधि :

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।

- **अ / आ + ए / ऐ = ऐ**

जैसे : - एक (अ) + एक (ए) = एकैक

- 'एक्' के 'क्' से 'ऐ' का संयोग होने से - ए कै क = एकैक
- **अन्य उदाहरण :**

सदा (आ) + एव (ए) = सदैव (ऐ)

तथा (आ) + एव (ए) = तथैव (ऐ)

टिक (अ) + ऐत (ऐ) = टिकैत (ऐ)

गंगा (आ) + ऐश्वर्य (ऐ) = गंगैश्वर्य (ऐ)

- **अ / आ + ओ / औ = औ**

जैसे : - जल (अ) + ओघ (ओ) = जलौघ

- 'जल्' के 'ल्' से 'औ' का संयोग होने से - जल् औ घ = जलौघ बना
- **अन्य उदाहरण :**

परम (अ) + ओषधि (ओ) = परमौषधि (औ)

बिम्ब (अ) + ओष्ठ (ओ) = बिम्बौष्ठ (औ)

गृह (अ) + औत्सुक्य (औ) = गृहौत्सुक्य (औ)

गंगा (आ) + ओघ (ओ) = गंगौघ (औ)

महा (आ) + औषध (औ) = महौषध (औ)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार अधोलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. संधि कीजिए ।

वन + औषधि = ...

परम + औदार्य = ...

2. संधि विच्छेद कीजिए ।

शुद्धोदन = ...

महौषध = ...

(4) यण् स्वर संधि :

- यदि इ/ई, उ/ऊ और ऋ के बाद भिन्न स्वर आए तो इ/ई का 'य', उ/ऊ का 'व' और ऋ का 'र' हो जाता है। इसके संदर्भ में निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए।
- **इ / ई + भिन्न स्वर :**

जैसे : - इ / ई

↓

य् (यह भिन्न स्वर से मिल जाता है)

जैसे : प्रति + एक = प्रत्येक

↓ ↓

इ ए ('इ' से भिन्न स्वर है)

↓ ↓

य् ये (भिन्न स्वर से मिलने पर)

- अगला रूप, प्रत् ये क
- सभी खंड़ों को मिलाने पर प्रत्येक बना।

अन्य उदाहरण:

आदि (इ) + अन्त (अ) = आद्यन्त (य)

प्रति (इ) + अक्ष (अ) = प्रत्यक्ष (य)

वि (इ) + अर्थ (अ) = व्यर्थ (य)

अति (इ) + आचार (आ) = अत्याचार (या)

वि (इ) + आकुल (आ) = व्याकुल (या)

अति (इ) + उत्तम (उ) = अत्युत्तम (यु)

वि (इ) + उत्पत्ति (उ) = व्युत्पत्ति (यु)

दधि (इ) + ओदन (ओ) = दध्योदन (यो)

देवी (ई) + आगम (आ) = देव्यागम (दा)

नि (इ) + ऊन (ऊ) = न्यून (यू)

उ/ऊ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

अनु (उ) + एषण (ए) = अन्वेषण (वे)

अनु (उ) + ईक्षण (ई) = अन्वीक्षण (वी)

अनु (उ) + अय (अ) = अन्वय (व)

पशु (उ) + आदि (आ) = पश्वादि (वा)

लघु (उ) + आहार (आ) = लघ्वाहार (वा)

ऊह (ऊ) + अपोह (अ) = ऊहापोह (आ)

वधू (ऊ) + ऐश्वर्य (ऐ) = वध्वैश्र्य (वै)

वध (ऊ) + आगमन (आ) = वध्वागमन (वा)

ऋ + भिन्न स्वर के उदाहरण:

पितृ (ऋ) + आदेश (आ) = पित्रादेश (रा)

मातृ (ऋ) + आनन्द (आ) = मात्रानन्द (रा)

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

संधि कीजिए।

- अति + अन्त = ...
- इति + आदि = ...
- वि + आधि = ...
- अभि + उदय = ...
- गौरी + आदेश = ...
- पशु + अधम = ...
- मधु + आचार्य = ...
- वधू + आगमन = ...

संधि विच्छेद कीजिए।

- अत्यधिक = ...
- यद्यपि = ...
- गत्यात्मकता = ...
- सख्यागमन = ...
- व्याधात = ...
- उपर्युक्त = ...
- व्यूह = ...
- सरयागमन = ...
- स्वल्प = ...
- मध्वासव = ...

(5) अयादि स्वर संधि :

- यदि ए, ऐ, ओ और औ के बाद भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय् 'ऐ' का आय् 'ओ' का अव् और 'औ' का आव् हो जाता है । इसके संदर्भ में यह याद रखिए कि अय्, आय् और आव् के य् और व् आगेवाले भिन्न स्वर से मिल जाते हैं।

निम्नलिखित उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए

- **उदाहरण :**

  जैसे : नै + अक

  ↓ ↓

  ऐ अ (भिन्न स्वर)

  ↓ ↓

  आय् य (न् + आ = ना) शब्द बनेगा = नायक

  - **अन्य उदाहरण :**

    चे (ए) + अन (अ) = चयन (अय)

    नै (ऐ) + अक (अ) = नायक (आय)

    पो (ओ) + अन (अ) = पवन (अव)

    गै (ऐ) + इका (इ) = गायिका (आयि)

    पो (ओ) + इत्र (इ) = पवित्र (अयि)

    भौ (औ) + उक (उक) = भावुक (आवु)

    धौ (औ) + अक (अ) = धावक (आव)

    पौ (औ) + अक (अ) = पावक (आव)

  उपर्युक्त उदाहरणों के आधार निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(1) संधि कीजिए।

- ने + अन = ...
- गै + अन = ...
- श्रो + अन = ...
- शै + अन = ...

(2) संधि विच्छेद कीजिए।

- नायिका = ...
- शावक = ...
- श्रावण = ...

●